

प्रेस विज्ञप्ति

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत वेटेनरी विश्वविद्यालय को दो नई परियोजनाओं स्वीकृत डग (झालावाड़) में मालवी गौ नस्ल प्रजनन केन्द्र और सरमथुरा (धौलपुर) में बकरी फार्म की स्थापना करेगा वेटेनरी विश्वविद्यालय

बीकानेर, 27 जून। राज्य स्तरीय स्वीकृति समिति (एस.एल.एस.सी.) ने राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत वेटेनरी विश्वविद्यालय को दो नई परियोजनाओं की स्वीकृति के साथ ही कार्यशील 16 अनुसंधान परियोजनाओं के लिए वर्ष 2015-16 के लिए बजट राशि का आवंटन किया है। राज्य स्तरीय समिति की बैठक 18 जून 2015 अतिरिक्त मुख्य सचिव (कृषि) की अध्यक्षता में जयपुर में आयोजित की गई थी। वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि मुख्यमंत्री के बजट भाषण में घोषित दो नई परियोजनाओं के लिए 8 करोड़ रु. राशि को मंजूरी दी गई है। राज्य सरकार ने नई परियोजनाओं में डग (झालावाड़) में मालवी गौ वंश का प्रजनन फार्म तथा पशुपालन डिप्लोमा संस्थान के लिए वर्ष 2015-16 के लिए 6 करोड़ रु. राशि की स्वीकृति दी है। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि मालवी नस्ल के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए डग (झालावाड़) मालवी गौ वंश प्रजनन फार्म की स्थापना की जाएगी। इसी के साथ सरमथुरा (धौलपुर) में वेटेनरी विश्वविद्यालय द्वारा नए बकरी प्रजनन फार्म की स्थापना कर बकरी पालकों को प्रशिक्षण और तकनीकी हस्तांतरण के कार्यों को अंजाम दिया जाएगा। इसके लिए प्रारंभ में श्रेष्ठ नस्ल की 600 बकरियों को रखने और आधारभूत संरचनाओं के लिए 2 करोड़ रुपये राशि मंजूर की गई है। वेटेनरी विश्वविद्यालय को पूर्व में स्वीकृति की गई 16 परियोजनाओं के लिए भी 28.70 करोड़ रुपये राशि की स्वीकृति मिली है। गौरतलब है कि उच्च कोटि की गौवंश की देसी नस्लों राठी, थारपारकर, कांकरेज एवं गिर के संरक्षण एवं विकास के लिए वेटेनरी विश्वविद्यालय, द्वारा राज्य में फार्म स्थापित किये जा चुके हैं। विश्वविद्यालय के वल्लभनगर (उदयपुर) में गिर नस्ल, कोडमदेसर में कांकरेज व साहीवाल नस्ल, नोहर (हनुमानगढ़) और बीकानेर में राठी नस्ल तथा चांदन (जैसलमेर) और बीछवाल (बीकानेर) में थारपारकर नस्लों के विकास पर अनुसंधान किया जा रहा है। इसी कड़ी में वेटेनरी विश्वविद्यालय में मालवी गौ नस्ल के लिए प्रजनन फॉर्म को मंजूरी मिलने से राज्य में पशु नस्ल संवर्धन कर दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किये जा सकेंगे। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि राज्य में जलवायु के अनुकूल उच्च कोटि की गौवंश नस्लों की दुग्ध उत्पादन क्षमता अन्य नस्लों के मुकाबले सर्वाधिक है अतः मालवी नस्ल के फार्म की स्थापना और संरक्षण कार्यों से पशुपालकों को अपनी आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। वेटेनरी विश्वविद्यालय में देशी नस्लों के वैज्ञानिक संरक्षण और अनुसंधान कार्यों की बढ़ौलत स्थानीय गौवंश की दुग्ध क्षमता में वृद्धि का लाभ सीधे प्रदेश के पशुपालकों को मिल सकेगा।

